खिल्लारी

भारत की गौरवशाली देशी गोवंशीय विरासत

प्रस्तावना

भारत की धरती पर गोवंश की अनेक विशिष्ट नस्लों ने सदियों से अपनी अलग पहचान बनाई है। उनके इतिहास, उत्पत्ति, स्वरूप, गुण और उपयोग का विवरण पुरानी पुस्तकों, सरकारी रिपोर्टों, सर्वेक्षणों तथा अन्य ऐतिहासिक स्रोतों में बिखरा हुआ है।

यह संकलन उसी प्रामाणिक ऐतिहासिक सामग्री को एक स्थान पर प्रस्तुत करने और हिंदी पाठकों के लिए सरल एवं सुगम बनाने का प्रयास है। इसमें भारतीय गोवंश के इतिहास, पहचान और विशेषताओं से संबंधित जानकारी को मूल स्रोतों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

यह संकलन किसी नस्ल का आधुनिक वैज्ञानिक मूल्यांकन नहीं, बल्कि ऐतिहासिक स्रोतों में दर्ज उसके स्वरूप, विशेषताओं और इतिहास को आज के पाठक तक पहुँचाने का एक विनम्र प्रयास है।

॥ मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः ॥

मूल स्रोत
पुस्तक: Breeds of Indian Cattle, Bombay Presidency
लेखक: K. Hewlett
प्रकाशन वर्ष: 1912

पुस्तक की ऑनलाइन PDF प्रति: | www.surbhisewa.com

अनुवाद संबंधी सूचना

यह हिंदी पाठक संस्करण कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की सहायता से तैयार किया गया है। किसी तथ्य अथवा अनुवाद में अंतर पाए जाने पर संबंधित मूल पुस्तक को ही अंतिम और प्रमाणिक स्रोत माना जाए।

खिल्लारी (हनम) गोवंश

मूल स्रोत: के. हेवलेट, बॉम्बे प्रेसीडेंसी के भारतीय गोवंश, 1912

कार्य-क्षमता, स्वभाव और वंशगत प्रभाव

खिल्लारी अथवा हनम मध्यम आकार का गोवंश है। लेखक इसे विशेष रूप से ऐसे सड़क-कार्य के लिए उपयुक्त बताता है जिसमें शक्ति और सहनशक्ति के साथ सक्रियता तथा मध्यम गति की आवश्यकता हो। गाड़ी के काम के लिए यह सबसे अधिक उपयुक्त माना गया है, फिर भी ठीक प्रकार से साधे जाने पर यह उत्कृष्ट सर्वांगीण कामकाजी पशु बनता है।

यह मोट से पानी खींचने और हल चलाने—दोनों कामों में अच्छा कार्य करता है, विशेषकर बधियाकरण के बाद। इन कामों में इसकी कमी इसका तेज और उग्र स्वभाव बताया गया है, जिसके कारण बिना बधिया और अधपके पशुओं को नियंत्रित करना कठिन हो सकता है।

नस्ल को कठोर परिस्थितियाँ सहने वाली बताया गया है; यह ऐसी दशाओं में भी रह सकती है जिन्हें उपजाऊ प्रजनन क्षेत्रों की अनुकूल परिस्थितियों के अभ्यस्त बड़े और भारी गोवंश सहन नहीं कर पाते। लेखक नस्ल को बहुत 'प्रभावशाली' भी कहता है—अर्थात खिल्लारी रक्त दूर की पीढ़ियों में भी उसके विशिष्ट लक्षण काफी हद तक संतान में प्रकट कर सकता है। इसी कारण इसे दक्कन की छोटी और कमजोर नस्लों को सुधारने के लिए विशेष रूप से उपयुक्त माना गया है। लेखक लिखता है कि यह प्रक्रिया पहले से चल रही थी और बेहतर व बड़े तथाकथित दक्कनी पशुओं में खिल्लारी रक्त का प्रभाव निकट निरीक्षण से दिखाई देता था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 16 | पीडीएफ पृ. 32.

मुख्य प्रजनन क्षेत्र और 'मांडेशी' नाम

इस नस्ल का प्रजनन शोलापुर, सतारा और बीजापुर जिलों के कुछ भागों तथा जाथ, मिरज, सांगली, औंध, जामखंडी और कोल्हापुर रियासतों में होता था। ब्रिटिश जिलों में पहले इसकी संख्या लेखक के समय की तुलना में अधिक बताई गई है। कहा जाता था कि कभी यह भीमा की सहायक मान नदी की घाटी की सामान्य नस्ल थी और कुछ लोग इसे अब भी 'मांडेशी' कहते थे।

शोलापुर जिले के सांगोला, पंढरपुर और मालशिरस तालुकों, बीजापुर जिले के इंडी तालुका तथा सतारा जिले के मान, खानापुर और कोरेगाँव तालुकों में इसके प्रजनक मिलते थे। औंध राज्य का आटपाडी महाल इस नस्ल के लिए प्रसिद्ध था और मंगलवेढ़ा सांगली राज्य के झुंडों का चराई-क्षेत्र था। जाथ, मिरज, सांगली, औंध, जामखंडी, मुधोल और कोल्हापुर राज्य भी इसके झुंड रखते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 16 | पीडीएफ पृ. 32.

मैसूर से संबंध और हनम–खिल्लारी नामों का प्रश्न

लेखक के अनुसार इस बात में बहुत कम संदेह है कि नस्ल मूलतः मैसूर से आई, क्योंकि इसका सामान्य प्रकार वहाँ मिलने वाले गोवंश जैसा है और 'हनम' शब्द का अर्थ भी 'दक्षिण' बताया गया है। फिर भी इसे कब और किसके द्वारा लाया गया, इसका कोई अभिलेख उपलब्ध नहीं था।

इन जिलों में नस्ल बहुत वर्षों से स्थापित थी और लेखक के अनुसार संभवतः पर्यावरण तथा दूसरे रक्त के मिश्रण से उसमें इतने परिवर्तन हो चुके थे कि वह एक अलग नस्ल के रूप में मानी जा सकती थी। 'हनम' और 'खिल्लारी' शब्दों को लेकर कुछ भ्रम भी था। कुछ लोग दोनों नामों को समानार्थक मानते थे, जबकि अन्य उनमें अंतर बताते थे।

इस दूसरे मत के अनुसार हनम, अमृत महल और कृष्णा वैली गायों के संकरण से बना प्रकार था, जबकि खिल्लारी अमृत महल और बड़े दक्कनी प्रकार की गायों के संकरण से बना माना जाता था। लेखक इन दोनों के बीच अंतर को बहुत मामूली बताता है—लगभग उतना ही जितना एक ही नस्ल के अलग-अलग पशुओं में दिख सकता है। तथाकथित हनम में मुख्य अंतर कुछ अधिक चौड़ा माथा और सींगों का कम या अधिक आगे की ओर वक्र होना बताया गया है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 16–17 | पीडीएफ पृ. 32, 34.

खानदेश और सतपुड़ा का खिल्लारी

मुख्य प्रजनन क्षेत्रों के बाहर खानदेश के कुछ भागों और विशेष रूप से सतपुड़ा पहाड़ियों में भी शुद्ध खिल्लारी मिलता था। सतपुड़ा में, मुख्यतः खानदेश के उत्तर में होलकर के क्षेत्र में, पेशेवर पशुपालक बड़ी संख्या में खिल्लारी पालते थे। मोलिसन के उद्धृत विवरण में सतपुड़ा के प्रमुख स्थानों के रूप में छोड़ी, बोराड़ी, धोड़वाड़ा, हाटेड, सापकानी, बड़वानी, मेलोन, केटिया, सांगवी और पालासनेर का उल्लेख है।

मोलिसन के अनुसार सतपुड़ा के खिल्लारी का शरीर-रूप मैसूर गोवंश से मिलता है और वहाँ के वर्तमान पशु मूलतः बाहर से लाए गए पशुओं से निकले माने गए। कहा जाता था कि लगभग 80 वर्ष पहले नासिक जिले के एक गवड़िया धनगर के पास मैसूर गोवंश था और अकाल के वर्ष में वह उन्हें सतपुड़ा ले गया। वर्तमान खिल्लारी उन्हीं पशुओं के वंशज बताए गए और मूल शुद्ध सांडों को सफेद वराड़ी गायों पर उपयोग किए जाने की बात कही गई।

खानदेश में खिल्लारी अभी भी बड़ी संख्या में मिलते थे। दक्कन के अनेक भागों में भी इस नस्ल के पशु कभी-कभी मिलते थे और दक्कनी नस्ल में खिल्लारी रक्त का पर्याप्त मिश्रण हुआ था। लेखक के अनुसार इससे दक्कनी पशुओं के आकार, सहनशक्ति और टिकाऊपन में सुधार हुआ, जबकि उनकी कठोरता बहुत अधिक कम नहीं हुई।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 17 | पीडीएफ पृ. 34; मोलिसन का उद्धृत विवरण.

सामान्य आकार और रंग

पशु	कुकुद के पीछे ऊँचाई	छाती का घेरा
अच्छा सांड / बैल	50–54 इंच (लगभग 127.0–137.2 सेमी)	66–80 इंच (लगभग 167.6–203.2 सेमी)
अच्छी गाय	44–48 इंच (लगभग 111.8–121.9 सेमी)	58–63 इंच (लगभग 147.3–160.0 सेमी)

गायों और बैलों का प्रमुख रंग सफेद या धूसर-सफेद बताया गया है। बैल कम मिलते थे, क्योंकि बधियाकरण सामान्य प्रथा नहीं थी। सांड अधिकतर धूसर, पीताभ-भूरे या पीले होते थे और गर्दन, कुकुद, छाती, पिछला भाग, अग्रबाहु और नली की हड्डियों पर रंग लौह-धूसर या लाल-भूरे में गहरा सकता था।

बहुत से पशुओं में चेहरे और गलकम्बल के आसपास सफेद-धूसर चितकबरे निशान दिखाई देते थे और कुछ में यह चितकबरापन पूरे शरीर पर फैल जाता था। कुछ पशु गहरे रंग के भी होते थे—मटमैले भूरे या गहरे धूसर—जिनके सिर, गलकम्बल और गर्दन पर सफेद चितकबरे निशान हो सकते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 17 | पीडीएफ पृ. 34.

अमृत महल से समानता और शारीरिक गठन

सामान्य गठन में खिल्लारी अमृत महल जैसा दिखाई देता है और लेखक के अनुसार बहुत संभव है कि इसका मूल भी उसी नस्ल से जुड़ा हो। फिर भी खिल्लारी का ढाँचा बड़ा और कुछ अधिक मोटा है तथा उसमें अमृत महल की विशेष 'उच्च श्रेणी का' अर्थात अत्यंत उच्च और सुघड़ नस्ली आभा उतनी स्पष्ट नहीं होती।

चेहरा अमृत महल की तरह लंबा और संकरा है। माथा पीछे की ओर ढलता है और आँखों के ऊपर उभरता है, जिससे माथे की मध्य रेखा में एक धँसा हुआ खाँच बनता है जो ऊपर सिर के शीर्ष तक जाता है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 18 | पीडीएफ पृ. 35.

सींग और उन्हें सजाने की प्रथा

सींग ललाट-अस्थि से पास-पास निकलते हैं, फिर अलग होते हुए पीछे की दिशा में जाते हैं और सिरे के निकट अचानक ऊपर की ओर मुड़ते हैं। वे आधार पर मोटे और सिरों पर बहुत नुकीले होते हैं। सांड में उनकी लंबाई सामान्यतः मध्यम से छोटी, जबकि गाय और बैल में काफी अधिक होती है।

यह केवल सामान्य प्रकार का वर्णन है; लेखक ढलान, दिशा और वक्रता में अनेक भिन्नताएँ मिलने की बात स्पष्ट करता है। सींग प्रायः गुलाबी या गुलाबी-भूरे होते हैं और उन पर भूरे या काले रंग की धारियाँ मिलती हैं। फिर भी वास्तविक रंग पहचानना कठिन होता था, क्योंकि लोगों में सींग रंगने की प्रथा थी—विशेषकर सांडों और बैलों में, और कुछ कम मात्रा में गायों में भी। सांड और बैल के सींगों के सिरों पर सजावटी पीतल की टोपी लगाना या सिरे के पास छेद करके रंगीन फुंदना बाँधना भी सामान्य प्रथा बताई गई है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 18 | पीडीएफ पृ. 35.

खिल्लारी बैल

(KHILLARI BULL)

सोत: K. Hewlett, Breeds of Indian Cattle, Bombay Presidency, 1912

Plate XI

“स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।”

ऐतिहासिक अभिलेख चित्र

आँखें, कान, मुखाग्र और अग्रभाग

लेखक आँखों के भाव को उग्र और 'अविश्वसनीय' बताता है। आँखों की श्लेष्मा झिल्लियाँ अक्सर रक्ताभ होती थीं, जिससे आँखों में लालिमा दिखाई देती थी। आँखें गहरे गड्ढों में, सिर के कुछ पार्श्व भाग की ओर स्थित होती हैं और पलकों के बीच का खुलाव अंडाकार है। पलकों की त्वचा पीताभ, गुलाबी या मांसवर्ण की हो सकती है। आँखों के ऊपर की त्वचा झुर्रीदार होती है और सामान्यतः तीन गहरी, स्पष्ट धारियाँ दिखाई देती हैं। कान छोटे, छोटे-लंबाई वाले और नुकीले हैं। विश्राम की अवस्था में वे सामान्यतः पीछे और बाहर की दिशा में रहते हैं, किंतु पशु के चलते समय सतर्क ढंग से स्वतंत्र रूप से हिलते हैं। मुखाग्र पीताभ, गुलाबी-पीला या मांसवर्ण का होता है और कभी-कभी चितकबरा भी मिलता है।

सांड की गर्दन छोटी और बहुत मोटी, जबकि गाय की गर्दन महीन होती है। सांड का कुकुद बड़ा और भारी है, गाय में छोटा और हल्का। गलकम्बल सांड में पर्याप्त बड़ा और विकसित है तथा गाय में कुछ कम। छाती चौड़ी, गहरी और विशाल है; पीठ और कमर चौड़ी, मजबूत और मांसल हैं।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 18 | पीडीएफ पृ. 35.

पिछला भाग, पैर, खुर और समग्र रूप

पिछला भाग और कूल्हा ढलान लिए रहता है। पूँछ लंबी और महीन है तथा अंत में भूरा या काला बालों का गुच्छा रहता है। पैर सही स्थिति में हैं और अग्रबाहु तथा जाँघें मांसल हैं। खुर छोटे, कठोर और सुडौल हैं।

खुर के कठोर सींगनुमा भाग का रंग बदलता है; काला या भूरा सामान्य है, किंतु गुलाबी या पीताभ-भूरा भी अक्सर देखा जाता है। समग्र रूप ठोस और मजबूत है। एक असामान्य नहीं मानी गई कमी घुटने के नीचे हड्डी का हल्का होना है, हालांकि हड्डी की गुणवत्ता अच्छी दिखाई देती है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 18–19 | पीडीएफ पृ. 35, 37.

दूध, बछड़ा और प्रजनन-अंतराल

खिल्लारी गायों को बहुत कम दूध देने वाली बताया गया है और वे शायद ही बछड़े की आवश्यकता से अधिक दूध देती थीं। सतपुड़ा के खिल्लारी दक्षिणी मराठा क्षेत्र के पशुओं से थोड़ा अलग बताए गए हैं—वे छोटे, हल्के और कम ठोस थे तथा उनका रंग लगभग हमेशा पूरा सफेद होता था। गाय लगभग 18 महीने में एक बछड़ा देती थी; कुछ प्रतिवर्ष और कुछ केवल 2 वर्ष में एक बार ब्याती थीं। बछिया लगभग 3½–4 वर्ष की आयु में प्रजनन शुरू करती थी। बछड़े को गाय का पूरा दूध पीने देना सामान्य प्रथा थी और गाय जितने समय दूध देती, बछड़ा उतने समय चूसता रहता था। ब्याने के बाद गाय सामान्यतः तब तक फिर ऋतु में नहीं आती थी जब तक बछड़े का दूध न छुड़ाया जाए; यह सामान्यतः 6–8 महीने बाद होता था।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 19 | पीडीएफ पृ. 37.

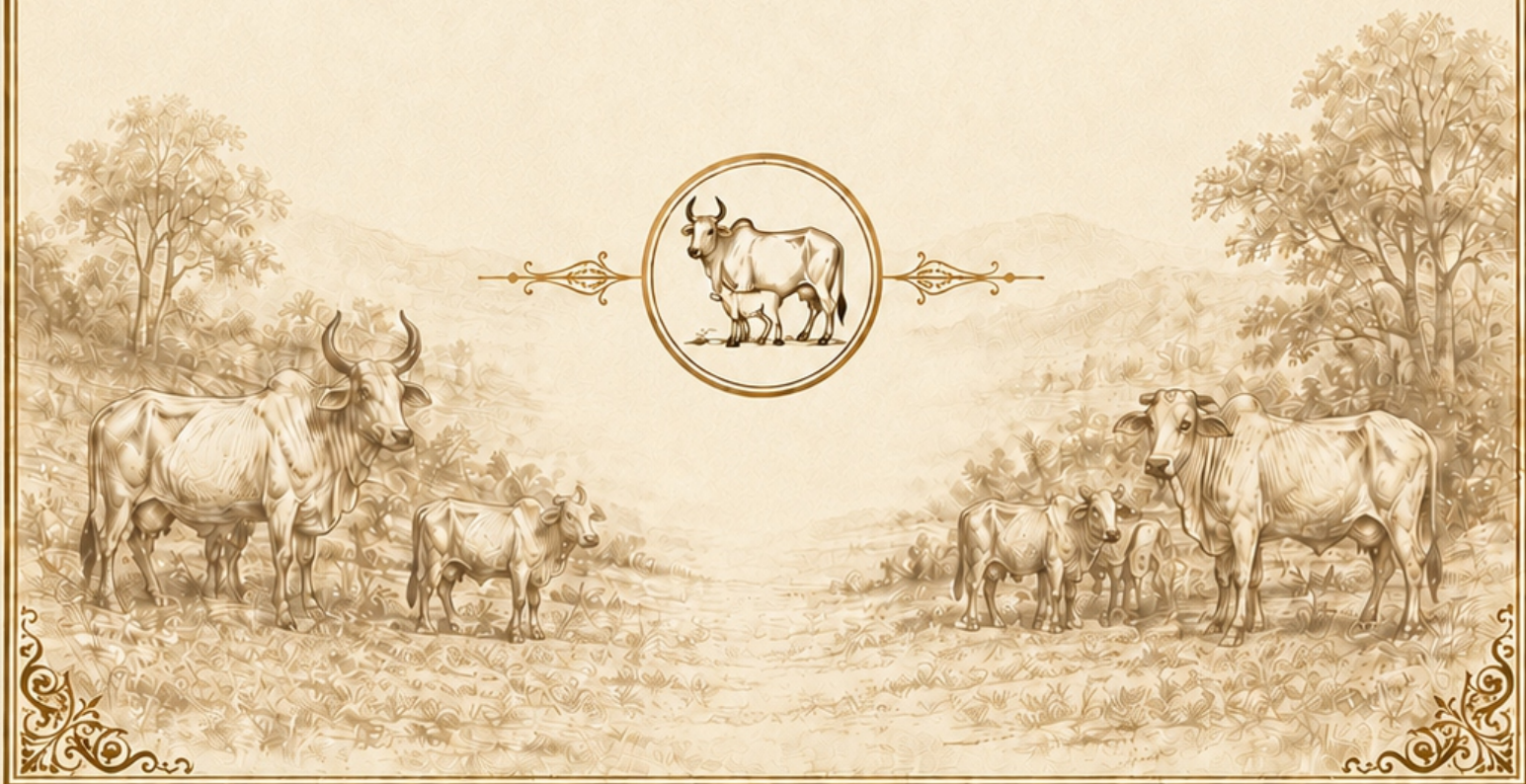

खिल्लारी गाय

(KHILLARI COW)

सोत: K. Hewlett, Breeds of Indian Cattle, Bombay Presidency, 1912

Plate XII

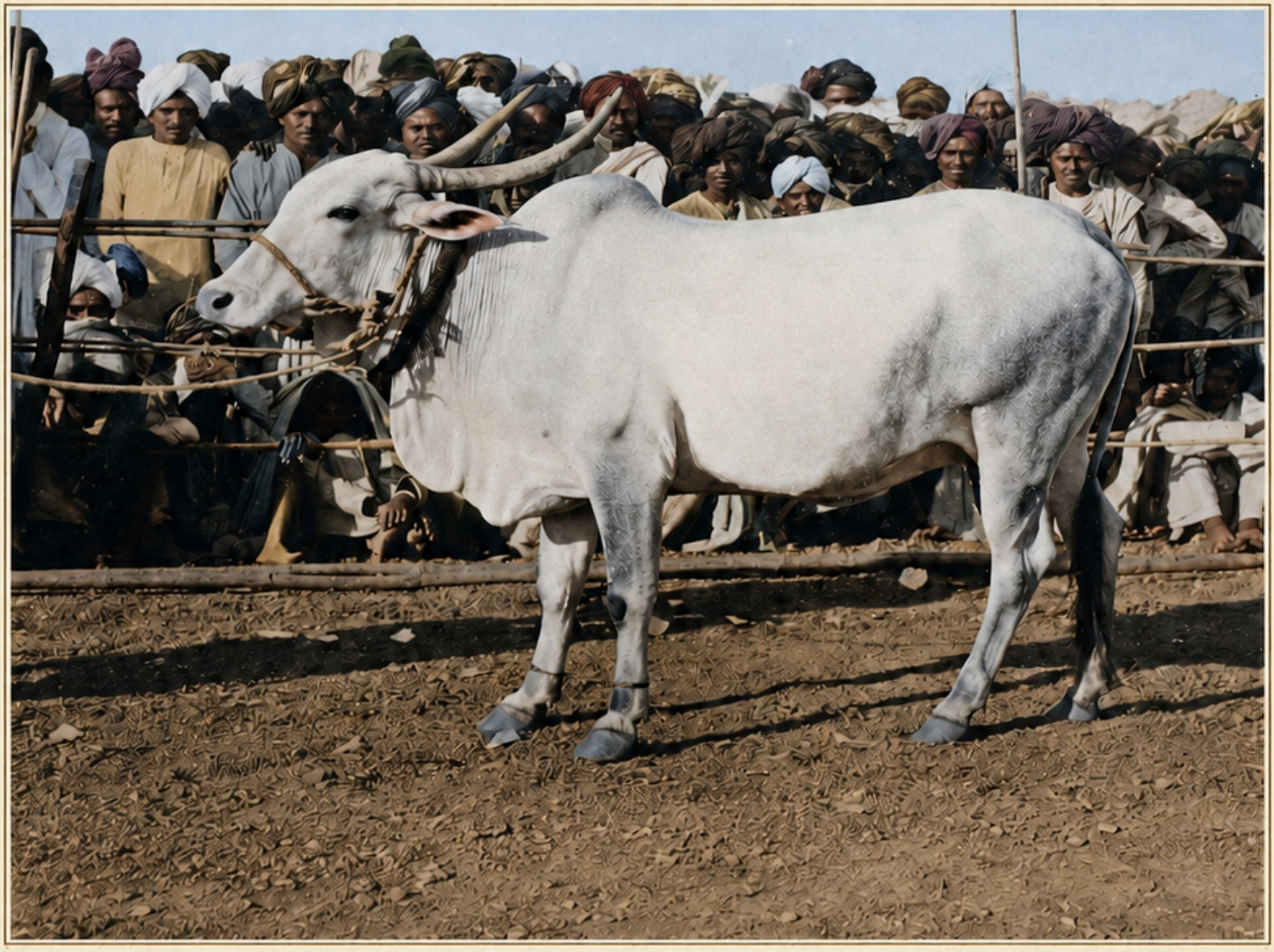

“स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।”

ऐतिहासिक अभिलेख चित्र

स्वभाव और संभाल

लेखक सभी खिल्लारी पशुओं के स्वभाव को अनिश्चित और कुछ हद तक हठी बताता है, विशेष रूप से तब जब वे झुंडों में पले हों और मानव-संभाल के अभ्यस्त न हों। उग्र खिल्लारी पशुओं के पास जाना वह स्पष्ट रूप से खतरनाक बताता है; उनके लंबे, नुकीले सींग उत्तेजित अवस्था में गंभीर घाव कर सकते थे और बहुत प्रभावी हथियार बन जाते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 19 | पीडीएफ पृ. 37.

दक्कन और दक्षिणी मराठा क्षेत्र की पालन व्यवस्था

दक्कन और दक्षिणी मराठा क्षेत्र में, जहाँ इस नस्ल का बड़ा भाग मिलता था, एक व्यक्ति के पास 3–4 से अधिक गायें होना असामान्य था। मालिक सामान्यतः पेशेवर चरवाहे नहीं बल्कि कृषक थे। पशु गाँव के दूसरे गोवंश के साथ आसपास के उपलब्ध चरागाहों पर चरते थे और स्थानीय चराई समाप्त होने पर पेशेवर पशुपालकों की तरह दूर के चराई क्षेत्रों में नहीं ले जाए जाते थे।

इसके विपरीत रियासतों के झुंड—जिनमें कुछ झुंड कई सौ पशुओं तक के थे—चराई समाप्त होने पर एक कुरण से दूसरे कुरण में ले जाए जाते थे। इन राज्यों के कुरण अच्छे चराई क्षेत्र थे; सामान्य वर्षों में कमी बहुत कम होती और अतिरिक्त राशन की आवश्यकता नहीं पड़ती थी।

ब्रिटिश जिलों के गाँवों में चराई मुख्यतः सूखी, पथरीली ऊसर भूमि और बेकार जमीन पर निर्भर थी। वर्षा के बाद यह चराई 3–4 महीने से अधिक नहीं चलती थी; इसलिए प्रजनन पशुओं को थोड़ी मात्रा में कड़बी या 'सुरमार' दिया जाता था। गाँव में पले खिल्लारी वर्षा ऋतु में रात को आश्रय में रखे जाते थे और अन्य समय गाँव के आसपास खुले बाड़ों में लाए जाते थे।

अच्छी खिल्लारी गायों के मालिक उन्हें बेचने में अत्यंत अनिच्छुक थे और उन पर बहुत गर्व करते थे। युवा नर पशु लाभ का महत्वपूर्ण स्रोत थे और 18 महीने से 2 वर्ष की आयु में ₹100–₹150 प्रति पशु आसानी से बिक जाते थे। लोग अपनी गायों को चुने हुए सांडों से गर्भित कराने में सावधान रहते थे, किंतु उपयुक्त सांड की सेवा प्राप्त करने में कई बार कठिनाई होती थी।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 19–20 | पीडीएफ पृ. 37–38.

सतपुड़ा में पेशेवर झुंड-पालन

मोलिसन के अनुसार सतपुड़ा में इन पशुओं का प्रजनन खिल्लारी या धनगर और वंजारी लोग करते थे। खिल्लारी/धनगर मुख्यतः पशु-प्रजनक और व्यापारी थे, जबकि वंजारी खेती भी कर सकते थे। प्रत्येक मालिक के पास 25–200 पशु होते और लगभग 100 पशुओं का झुंड 2 पुरुषों की देखरेख में चलना सामान्य था।

प्रजनन के लिए विशेष रूप से चुने गए सांड गायों और युवा पशुओं के साथ रखे जाते थे। युवा सांड सामान्यतः 1–2 वर्ष की आयु में बेच दिए जाते थे; गायें या बछियाएँ बहुत कम बेची जाती थीं। चरवाहे अपने ही तालुकों में रहते हुए पहाड़ियों में एक स्थान से दूसरे स्थान जाते थे और चराई कम होने पर झुंड आगे बढ़ाते थे।

चराई की पूर्ण कमी केवल कभी-कभी मई में होती थी। उस समय घास बहुत सूखी और कम पौष्टिक होती थी और कभी प्रति पशु प्रतिदिन ½ पाउंड (लगभग 0.23 किलोग्राम) खली या कपास-बीज दिया जाता था। इसी समय 'उंजन' और 'पीपर' के पत्ते भी खिलाए जाते थे।

पशु गाँवों के पास बहुत कम लाए जाते थे और अपने चरवाहों को छोड़कर अन्य लोगों के प्रति अत्यंत जंगली रहते थे। उन्हें कभी आश्रय नहीं दिया जाता था। वर्षा में 'बराड़' मिट्टी वाले प्राकृतिक रूप से सूखे और अच्छी जल-निकासी वाले पथरीले स्थान पर रात के लिए रोका जाता था, किंतु बाँधा नहीं जाता था। दिन में वे पास के जंगल-चरागाहों में चरते थे।

मोलिसन बारहमासी जलधाराओं, प्रचुर पेयजल तथा अच्छी छायादार चराई का भी उल्लेख करता है। जनवरी और फरवरी में झुंड पहाड़ियों से नीचे खेती वाले मैदानों में लाए जाते थे, जहाँ खेत फसल से खाली रहते लेकिन ठूँठ और मेड़ों पर पर्याप्त चुगाई मिलती थी। इस बदलाव से पशुओं की दशा सुधरती थी।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 20 | पीडीएफ पृ. 38; मोलिसन का उद्धृत विवरण.

मेले, बाजार और उपलब्धता

खिल्लारी सतारा जिले के म्हसवड़ और नागोबा पशु मेले में दिसंबर में, जाथ के यल्लम्मा देवी मेले में सामान्यतः जनवरी में तथा चिंचली मेले में सामान्यतः फरवरी में खरीदे जा सकते थे। वे कभी-कभी सांगोला के साप्ताहिक बाजार तथा पंढरपुर और शोलापुर में भी मिलते थे।

लेखक के अनुसार इन्हें प्राप्त करने का सबसे अच्छा स्थान म्हसवड़ के पास नागोबा मेला था। इन स्थानों पर मुख्यतः केवल नर पशु उपलब्ध होते थे, क्योंकि गायें मालिकों को बहुत प्रिय थीं और बेची नहीं जाती थीं।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 20 | पीडीएफ पृ. 38.

खिल्लारी बैल
(KHILLARI BULLOCK)

सोत: K. Hewlett, Breeds of Indian Cattle, Bombay Presidency, 1912

Plate XIII

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

माप / Dimensions (इंच / inches)

ककुट के शीर्ष तक ऊँचाई Height—Top of hump	ककुट के पीछे ऊँचाई Height—Behind hump	शरीर की लंबाई Length of body	शरीर का घेरा Girth	अगले पैर का घेरा Shank girth
54 इंच / inches	49½ इंच / inches	55 इंच / inches	66 इंच / inches	6½ इंच / inches

निचले पैर की लंबाई Length of shank	सींग की लंबाई Length of horn	चेहरे की लंबाई Length of face	माथे की चौड़ाई Breadth of forehead	कान की लंबाई Length of ear
6¼ इंच / inches	27 इंच / inches	24 इंच / inches	8¾ इंच / inches	8½ इंच / inches

1912 में दर्ज कीमतें

पशु/श्रेणी	मूल रिपोर्ट में दर्ज कीमत
स्थानीय 18 माह–2 वर्ष का युवा नर	₹100–₹150 प्रति पशु
नागोबा मेले में 18 माह–2½ वर्ष का युवा सांड	₹75–₹150
वयस्क सांड	₹150–₹250
वास्तव में अच्छा सांड	लगभग ₹400
असाधारण रूप से आकर्षक कामकाजी जोड़ी	₹700–₹1,000
सतपुड़ा व्यापारियों द्वारा 9–12 माह का सांड-बछड़ा	₹30–₹50

नागोबा मेले में हर वर्ष बड़ी संख्या में 18 महीने से 2½ वर्ष तक के युवा सांड ₹75–₹150 की कीमत पर बेचे जाते थे। वयस्क सांड ₹150–₹250 तक और वास्तव में अच्छे नमूने लगभग ₹400 तक पहुँच सकते थे।

कुछ मामलों में असाधारण रूप से अच्छी कामकाजी जोड़ियों के लिए ₹700–₹1,000 तक दिए जाने का उल्लेख है, किंतु लेखक स्पष्ट करता है कि ये सामान्य बाजार-भाव नहीं बल्कि 'असाधारण ऊँची कीमतें' थे—खरीदार आकर्षक जोड़ी पाने के लिए ऐसी राशि देने को तैयार होते थे। स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 20–21 | पीडीएफ पृ. 38, 40.

सतपुड़ा पशुओं का व्यापार और प्रशिक्षण

सतपुड़ा वाला प्रकार प्राप्त करना कठिन था, क्योंकि उसे बड़ी संख्या में मेलों तक नहीं लाया जाता था; घूमते व्यापारी ही उसे बेचते थे। कुछ पशु विशेष रूप से जुलाई, अगस्त और सितंबर में शिरपुर में मिल सकते थे।

मोलिसन के अनुसार स्थानीय व्यापारी युवा सांड खरीदते, बिक्री के बाद उन्हें लगभग 1 महीने तक गायों से अलग पहाड़ियों में रखते और फिर छोटे झुंडों में दक्कन की ओर बिक्री के लिए ले जाते थे। रास्ते में उन्हें यथासंभव संभाला और कुछ हद तक घरेलू बनाया जाता था, किंतु वे आसानी से वश में नहीं आते थे; उन्हें कुछ हद तक काबू योग्य बनाने में कम से कम 3 महीने लगते थे।

इनमें से बड़ी संख्या हर वर्ष अहमदनगर और पूना जिलों में लाई जाती थी। युवा पशुओं के खरीदारों को उन्हें नियमित काम के योग्य होने से पहले 2–3 वर्ष तक और रखना पड़ता था; इस दौरान कोमल व्यवहार से वे शांत और घरेलू हो जाते थे। व्यापारी 9–12 महीने के युवा सांड-बछड़ों को ₹30–₹50 में बेचते थे। स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 21 | पीडीएफ पृ. 40; मोलिसन का उद्धृत विवरण.

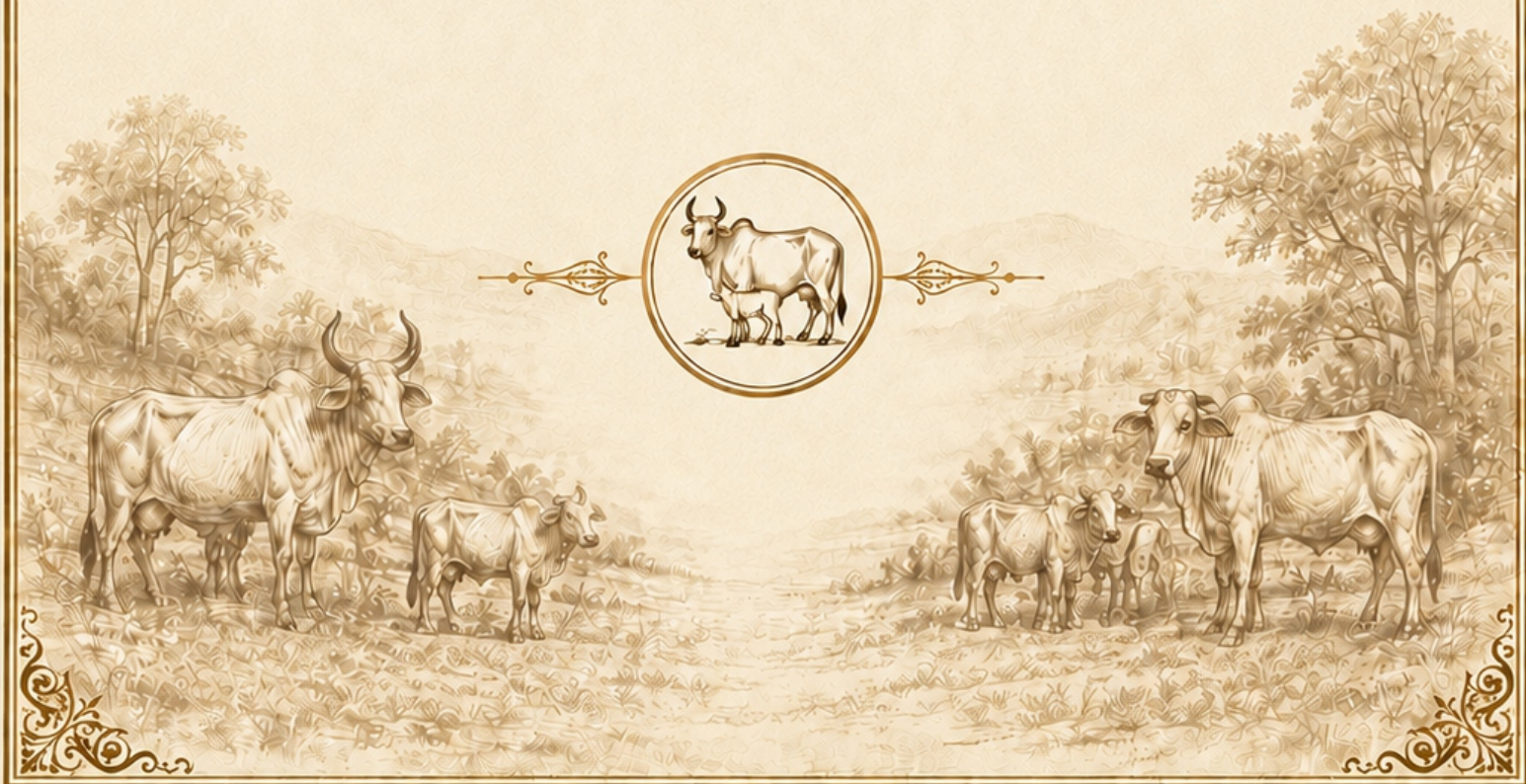

माँ है, शब्दों से नहीं,
आँखों से बोलती है।
इसके सीने पर अपना कान लगाओ तो सही।
हर धड़कन में दुलार है,
कुछ देर तुम भी इससे बतलाओ तो सही।
तुम्हारे हर दर्द को अपने में समेट लेगी,
बस माँ कहकर इससे लिपट जाओ तो सही।
गौ माता राष्ट्रमाता
सेवा करें
संरक्षण करें
संवर्धन करें
www.surbhisewa.com